पी ए यू विशेषज्ञों नें आलू के पिछेते झुलसा रोग के बारे में किसानों को सावधान किया

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय (पी ए यू), लुधियाना के वैज्ञानिकों ने बताया है पिछले कुछ दिनों में उत्तर भारत में बादलों और धुंध के कारण मौसम आलू की फ़सल में पिछेता झुलसा रोग लगने के लिए अनुकूल है।

पिछेता झुलसा रोग के पहले लक्षण पत्तों में छोटे, गोलाकार से अनियमित आकार के पानी से भरे धब्बों के रूप में दिखाई देते हैं। ठंडे, नमी वाले मौसम के दौरान, यह धब्बे अक्सर तेज़ी से चिकनाई वाले बड़े, गूढ़े भूरे या काले धब्बों में बदल जाते हैं।

धब्बों के आसपास अक्सर हल्के हरे से पीला किनारा होता है। अगर समय पर पिछेता झुलसा रोग को काबू में ना किया जाए तो पूरी फ़सल को नुकसान पहुँच सकता है।

पी ए यू के विशेषज्ञों ने आलू उत्पादकों को सलाह दी है वह अपने खेतों का लगातार सर्वेक्षण करें और फफूंदीनाश्क जैसे कि इंडोफिल ऐम-45/ऐंट्राकोल/कवच 500-700 ग्राम का छिड़काव करें। एक एकड़ के लिए 250-350 लीटर पानी में दवा घोलकर झुलसा रोग से पहले 7 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

अगर रोग पहले लग गया हो या रोग का खतरा अधिक हो तो आलू की फ़सल पर करज़ेट ऐम-8, मैलोडी डुओ 66.75 डब्ल्यू पी या रिडोमिल गोल्ड या सैक्टिन 60 डब्ल्यू जी 700 ग्राम या रीवस 250 एस सी 250 मिलिलीटर या इक्वेशन प्रो 200 मिलिलीटर प्रति एकड़ के हिसाब से 10 दिन अंतराल पर छिड़काव करें।

खुद बनाए टैंक मिश्रण का उपयोग ना करें। विशेषज्ञों ने कहा कि इस तरह फफूंदी में प्रतिरोधता बढ़ सकती है।